

स्तुत्या हि देवता प्राप्तत्रला सती प्रवर्धते. पञ्चनेन वर्धत ज्ञातवैदसम् RV. 2, 2, 1. वर्धायं यत् उत सोम इन्द्रं वर्धाद्ब्रह्म गिरि उक्त्वा च मन्म 6, 38, 4. स्तुनेश्च पास्त्रा वर्धति महे राधसे नृन्पार्य 8, 2, 29. यदी वर्धति प्रस्वा घृतेन 3, 5, 8. 10, 6. (मरुतः) ये तामवर्धन् 35, 9, 47, 4. ताममे विप्रा वर्धति सुष्टुतम् 5, 13, 5. स्तेमैर्वर्धति गोभिः प्रुम्भति 5, 22, 4. 29, 11. 36, 5. तं वर्धति नितयः पृथिव्याम् 6, 1, 5. 7, 97, 8. योश्च देवा वावृधुर्ये च देवान् 10, 14, 3. ववृधत् इन्द्रम् 4, 2, 17. वर्धतु त्वा सुष्टुतयः P. 3, 4, 117, Schol. वर्धाय absol. (vgl. ग्रहाय unter ग्रम् in den Nachträgen): ततस्तु भगवान्ब्रह्मा वर्धाय (वर्धाप्य die neuere Ausg.) स तु केशवम् । जगाम ब्रह्मलोकम् durch Segenswünsche u. s. w. erfreut habend HARIV. 10906. — 2) intrans. med. (in der älteren Sprache act. im perf., insbes. in der 3. pl., und die Form वर्धति u. s. w.; in der späteren Sprache aor. fut. und condit. auch im act.; in der epischen Sprache aus metrischen Rücksichten häufig auch sonst act.) a) wachsen, erwachsen; sich mehren, sich stärken, gedeihen; sich gross zeigen: लोकं च तस्य तनयं च वर्धते RV. 2, 25, 2. वर्धतां गोः 3, 1, 2. तन्वा वावृधानः 34, 1, 7, 19, 1. जहि रतो महिं चिदावृधानम् sich gross machend 4, 3, 14. 5, 42, 9. 6, 22, 6. 7, 104, 4. अर्धाम् तद्वावृधानं स्वर्वत् sich ausbreitend 1, 173, 1. द्विर्यत्त्रिमहते वावृधत् 6, 66, 2. ग्राश्च यन्नश्च वावृधत् विश्वे देवासः । प्रैभ्य इन्द्रावरूपा भूतम् als alle Götter, Männer und Frauen sich gross zeigten, da thatet ihr es ihnen zuvor 6, 68, 4. देव बर्हिर्वर्धमानं सुवोरम् blühend 2, 3, 4. पूर्वोर्हि गर्भः शरदौ वर्ध 5, 2, 2. असे नु कम्बरो वर्धाश्च 10, 50, 5. ता वृधत्तान् घ्नन्मर्ताप देवो पुरो दधे gross erscheinend, sich gross zeigend 5, 86, 5. 1, 138, 1. 6, 66, 11. अचित्रं चिद्धि त्रिन्वया वृधत्: 49, 11. VS. 38, 21. AV. 2, 28, 1. 5, 72, 2. सा नो भूमिर्वर्धयर्धमाना gedeihend lasse uns gedeihen 12, 1, 13. 13, 1, 49. इन्द्रशत्रुर्वर्धस्व ÇAT. Br. 1, 6, 3, 8. 11. 8, 1, 4. अनेन 2, 2, 1, 12. शल्मलिर्वनस्पतीनां वर्षिष्ठं वर्धते 13, 2, 7, 4. LĀTJ. 6, 5, 1. — सततं ववृधे मत्स्यः wuchs MBh. 3, 12757. ववृधे ऽत्तःपुरे शिशुः HARIV. 6437. ववृधिरे RAGH. 10, 79. KATHĀS. 17, 71. 61, 267. RĀĀA-TAR. 3, 110. अर्धर्धपाताम् 6, 212. BHĀG. P. 8, 20, 21. 24, 17. VET. in LA. (III) 19, 1. BRAHMA-P. ebend. 58, 6. निष्प्रत्यूकमवर्धत श्रुतिशाखाः समततः 92, 18. सर्वे ववृधुरल्पेन कालेनापिस्व नोरजाः MBh. 1, 4865. 4864. HARIV. 803. वर्धतम् 6439. मार्जारो वर्धते चापि wird dick und rund MBh. 5, 5438. fg. शशिनं शुक्लपत्न्या वर्धमानमिवोत्सरा R. 4, 54, 3. VARĀH. BRH. S. 4, 31. RĀĀA-TAR. 6, 292. WEBER, KRSHNĀG. 298. कलाभिः सोमस्य वर्धतीभिः MĀRK. P. 64, 9. उत्का वर्धते VARĀH. BRH. S. 94, 10. BHĀG. P. 1, 7, 30. दावाग्रेरिव वर्धतः (so ed. Bomb.) MBh. 3, 16072. ववृधे च मरुभागो व्यसानुदिने तथा । गुणैश्च यथा बालः कलाभिः शशलाञ्जनः ॥ MĀRK. P. 63, 8. व्यसा बुद्ध्या च 27, 1. पूर्णचन्द्रादये पूर्णा वर्धते सागरो यथा R. GORR. 2, 11, 18. 3, 30, 32. BHĀG. P. 8, 24, 41. सागरस्येव वर्धतः R. GORR. 2, 103, 57. वेलया वर्धमानया RĀĀA-TAR. 4, 539. तत्सेना नरनाथानां पृतनाभिः पेदे पेदे । कुल्यापगेव (so die ed. Calc.) कुल्याभिर्विशतीभिरवर्धत ॥ 3, 110. वर्धते दिनु सर्वासु — तद्गतसं सैन्यम् R. 3, 31, 43. भूमिं द्यो च ववृधिरे दानवाः breiteten sich aus über HARIV. 8066. वर्धता चैव वर्षेण 12773. वर्धमानात्रैः sich füllend R. 5, 10, 4. कुले वर्धते vermehrt sich M. 3, 57. अक्रान्येव वर्धते werden länger BuĀG. P. 5, 21, 4. Spr. 2519. अर्धमानश्चार्थः sich nicht mehrend HIT. 46, 8. धनम् durch Zinsen wachsen JĀGĀ. 2, 44. वर्धमानम्पुं तिष्ठेत् Spr. 4976. तस्य तद्वर्धते (राष्ट्रं) नित्यं सिच्यमान इव हुमः M. 9, 255. तेनापुर्वर्धते राज्ञो ऋषिणां राष्ट्रमेव च 7, 136.

येशो राष्ट्रं च 8, 302. धर्मः सत्येन 83. आयुर्विद्या यशो बलम् Spr. 3351, v. 1. ववृधे कामः MBh. 3, 2148. अन्वोऽन्वयजपसंरम्भः RAGH. 12, 92. स्त्रैः PANĀT. I, 1. धर्मविजयः RĀĀA-TAR. 3, 329. कीर्तिः Spr. 3167. शोकः R. 2, 62, 18. Spr. 110 (II). वर्त्स्यतावामयः स (d. i. परः der Feind) च 448. अद्भया वर्धते धर्मः R. 3, 43, 38. वीर्यम् 5, 3, 3. मदः BHĀTT. 14, 13. तुच्छास्यावृधदभतः 15, 29. नूनमापर्यमाणायाः सट्वा वर्धते र्वः verstärkt sich R. 4, 27, 12. धनतये वर्धति जाठराग्निः Spr. 781, v. 1. अर्धमेण वर्धता BHĀG. P. P. 3, 11, 21. स प्रेत्येकं च वर्धते gedeiht, dem geht es wohl M. 8, 172, 6, 34. नाब्रह्म तत्रगृध्रेति नात्रत्रं ब्रह्म वर्धते M. 9, 322. तथा ह्येता (प्रजाः) न वर्धन् MBh. 3, 1212. R. 3, 45, 15. तथा वर्धस्व भूपते । यथा र्विषया सोमो यथेन्द्रो वरूणो यथा 2, 11, 19. पुत्रवत्पात्यमानास्तु मरुत्तमना ॥ ववृधुर्विषये तस्य MĀRK. P. 116, 75. fg. वर्धस्वेत्याह राघवम् R. 7, 103, 7. कथं त्रिविपुर्यत्तं कथं वर्धेयुः MBh. 3, 344. सर्वतो वर्धति 5, 1702. वर्धिषीष्ठाः स्वजातेषु BHĀTT. 19, 26. वृद्धा emporgekommen seiend Spr. (II) 240. KATHĀS. 10, 25. शिल्पानि मत्वाश्च तथौपधानि — वर्धति gedeihen, haben guten Erfolg Spr. 4398. अयि तपो वर्धते ÇĀK. 12, 20. BHĀTT. 6, 68. RĀĀA-TAR. 5, 461. दीयमानं तदा विप्रा वर्धतामिति चाब्रुवन् so v. a. möge dir Segen bringen MBh. 14, 1854. — b) wachsen, in die Höhe gehen, beim Gottesurtheil mit der Wago so v. a. steigen (in der Wagschale) Z. d. d. m. G. 9, 667. MIT. 145, 12. — c) wachsen, gedeihen mit acc. der Beziehung: स्वयं वर्धस्व तन्वम् an deiner Person RV. 7, 8, 5. 10, 98, 10. 116, 6. यस्तविषो वावृधे शर्वः 23, 5. अस्येदिन्द्रे वावृधे वृक्ष्यं शवा मेदे सुतस्य 8, 3, 8. — d) gehoben —, freudig erregt werden; sich ergötzen, — begeistern durch, an oder bei Etwas (instr., auch loc.): तं क्त्रा भारती वर्धसे गिरा RV. 2, 1, 11. 11, 2. यस्मिन्निन्द्रः प्रदिवि वावृधानं श्रोकौ दधे 19, 1. स वावृधे नयो योषणासु 7, 95, 3. अग्ने वृधानं अर्द्धेतिं बुषस्व 3, 28, 6. यः स्तेमैर्भिर्वावृधे 32, 13. सुते सुते वावृधे वर्धनेभिः 36, 1. अग्रे वर्धासु इन्द्रभिः 6, 16, 16. पीली सोमस्य वावृधे 3, 40, 7. 47, 5. 51, 1. 53, 1. न रीषते (नः) वावृधानः परो दात् wenn er freudig gestimmt —, befriedigt ist 5, 3, 12. ये वावृधत् पार्थिवा य उरावत्तरिन्ता आ 52, 7. 68, 4. 6, 37, 5. 44, 13. 69, 6. पितुः पयः प्रतितं गृणाति माता तेन पिता वर्धते तेन पूत्रः dabei ergötzt sich der Vater und (wächst) das Kind 7, 101, 3. तुरस्वये 10, 96, 8. बृहस्पतिर्बृहत्भिर्वावृधानः 14, 3. AV. 1, 8, 4. 12, 1, 29. VS. 20, 43. इन्द्रं गृणीषे यस्मिन्पुरा वावृधुः शोशुडश्च RV. 2, 20, 4. रुद्रा ऋतस्य सदेनेषु वावृधुः 34, 13. 5, 59, 5. 7, 60, 5. 8, 51, 10. प्रुद्धैरुक्थैर्वावृधासम् 84, 7. 87, 8. बृहस्पतिर्ना कृषिषा वृधातु TS. 4, 2, 2, 1. इन्द्रो मदीय वावृधे शर्वसे वृत्रका नृभिः hat sich erregen lassen zu RV. 1, 81, 1. mit gen.: ममेर्धस्व सुष्टुतः an mir freue dich 8, 6, 12. अस्य सुवानस्य न्यवृदे वावृधानो अस्तः 2, 11, 20. वृधत्तमधराणाम् 8, 91, 7. कारिणां वृधत्तम् (so vermuthen wir) der Preisenden sich freudig 2, 29. जम्भे रसस्य वावृधे beim Schlucken (eigentlich im Rachen) freut sie sich des Safts (der Milch) 1, 37, 5. 4, 23, 1. वृधस् und वृधत् Ausrufe in Opferformeln: vergnüge dich u. s. w. ĀÇV. ÇR. 2, 3, 12. KAUC. 91. Aus der späteren Sprache gehören hierher Stellen wie: दिष्ट्या वर्धामहे पार्या दिष्ट्यासि पुनरागतः so v. a. wir haben Grund uns zu freuen, geben wir uns der Freude hin, wir können uns glücklich schätzen MBh. 3, 12286. वर्धसे दिष्ट्या जपो ऽयं प्रतिगृह्यताम् R. 6, 98, 6. VIKR. 8, 2. PANĀT. 46, 9. वर्धसे दिष्ट्या तत्रधर्मणा R. 3, 33, 99. बलेन पशसा चैव वर्धस्व प्रज्ञया तथा 5, 33, 21. दिष्ट्या धर्मपत्नीसमागमेन